ResearchPro International Multidisciplinary Journal

Vol- 1, Issue- 2, October-December 2025 ISSN (O)- 3107-9679

Email id: editor@researchprojournal.com Website- www.researchprojournal.com

"समकालीन हिन्दी कहानी और स्त्री विमर्श: एक आलोचनात्मक अध्ययन

डॉ0 मीनाक्षी

सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, श्री गुरु नानक महाविद्यालय, रुद्रपुर

भूमिका– हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण और संवेदनशील विषय रहा है। विषेश रूप से हिन्दी कहानी में स्त्री के अस्तित्व, उसकी पहचान, उसके संघर्ष और उसके सामाजिक स्थान पर गहन चिन्तन हुआ है। यह शोध–पत्र हिन्दी कहानी के माध्यम से स्त्री विमर्श की प्रवृत्तियों, दृष्टिकोणों और विविध आयामों को समझने का प्रयास करता है।

हिन्दी कहानी और स्त्री विमर्श– हिन्दी कहानी में स्त्री विमर्श को अनेक चरणों में विभाजित करके देखा जा सकता है। इसका पहला चरण महिला लेखन से पहले का दौर है जहाँ पुरूष लेखकों ने अपनी संवेदनशीलता के द्वारा महिलाओं की समस्याओं को उठाया गया है। मुख्यरूप से प्रेमचंद के दौर से महिला समस्या को गम्भीरतापूर्वक उठाया गया। बूढ़ी काकी, नया विवाह, गिला जैसी कहानियाँ। इसके उपरान्त जैनेन्दं ने अपनी कहानियों में नारी मन की सूक्ष्म परतों का विश्लेषण किया। यशपाल ने भी मार्क्सवादी विचारधारा के अन्तर्गत महिलाओं पर किए जा रहे शोषण वंचनाओं को अपनी कहानी में उभारा।

दूसरा दौर वह है जब स्वयं महिला लेखिकाएँ बड़ी संख्या में स्वातन्त्रोतर दौर में कहानी लेखन में पर्दापण करती है तथा भोगे हुए यथार्थ को अपने ही कलम से कलमबद्ध करती हैं। इस दौर में यह अवधारणा भी स्थापित हुई की स्त्रियों की वेदना को स्त्रियाँ ही समझ सकती हैं तथा यह भी घोषित किया गया कि संवेदना चाहे कितनी भी तीव्र व गहरी हो वह स्वयं वेदना की बराबरी नहीं कर सकती।

समकालीन हिन्दी कहानी में स्त्री विमर्श के प्रमुख कहानीकार–

कृष्णा सोबती– इनका जन्म 18 फरवरी 1925 गुजरात में हुआ था। भारत पाकिस्तान के विभाजन के समय वह हिस्सा पाकिस्तान में चला गया। विभाजन के बाद वे दिल्ली में आकर बस गयी और तब से वे यहीं रहकर साहित्य लेखन का कार्य कर रही हैं। उन्हें 1980 में जिन्दगी नामा के लिए साहित्य अकादमी और 1917 में ज्ञानपीठ पुरस्कार से नवाजा भी गया है।

रचनाएँ– मित्रों मजाड़ी (1980), बादलों के हीरे (1980), आजादी सम्मो जान की, सिक्का बदल गया, डरो मत, मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा, कुछ नहीं कोई नहीं, दोहरी साँझ, दो राँहें दो बाँहें, पहाडों के साये तले, बदली बरस गई एवं गुलाब जल गडेरिया।

मन्नू भण्डारी– इनका जन्म 03 अप्रैल 1931 को मंदसौर जिला (मध्य प्रदेश) के भानपुरा नामक गाँव में हुआ था। इनके पिता सुख संपतराय भण्डारी साहित्य और कला प्रेमी थे। इनकी कहानियाँ बदले हुए परिवेश में संस्कार और आधुनिकता के बीच उलझी हुई नारी के द्वन्द्व को प्रस्तुत किया है। ये भावुकता से ऊपर उठकर चिन्तन करती है। इनकी कुछ एक कहानियाँ मजदूर वर्ग की असहाय नारियों को भी चित्रित करती हैं।

कहानी संग्रह– मैं हार गई (1957), तीन निगाहों की एक तस्वीर (1968), एक प्लेट सैलाब (1961) एवं यही सच है (1996)।

उशा प्रियवंदा– इनका जन्म 24 दिसम्बर 1930 को कानपुर में हुआ था। ये शहरी परिवारों और नारी जीवन के संवेदनशील चित्रण के लिए जानी जाती हैं। इनकी कहानियों में आधुनिक जीवन की छटपटाहट, संत्राश, एकाकीपन जैसी समस्याओं की अभिव्यक्ति हुई है। इन्होंने मुख्य रूप से ऐसी युवतियों की कहानी को विषयवस्तु बनाया है जो स्वछंद एवं अकुंठ जीवन की चाह लिए बड़े शहरों और विदेशों में जाती हैं और उपभोक्तावादी संस्कृति से टकराकर इनका सम्पूर्ण जीवन संत्राश और नारीकीय हो जाता है।

कहानी संग्रह– जिन्दगी और गुलाब के फूल (1960), फिर बसन्त आया (1961), एक कोई दूसरा (1966) एवं कितना बड़ा झूठ (1972)।

मृदुला गर्ग– मृदुला गर्ग का जन्म 25 अक्टूबर 1938 को कलकत्ता में हुआ था। इनके पिता का नाम बी०पी० जैन और माता का नाम श्रीमती रविकांता था। हिन्दी कहानी में कृष्णा सोबती ने प्रेम और काम सम्बन्धों को लेकर जिस परम्परा का सूत्रपात किया मृदुला गर्ग उसकी सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कड़ी है। जिन पक्षों को सामाजिक मर्यादा आवरण में ढका जाता है, उन्हें ये खुले रूप में रखने की पक्षधर हैं। इनकी कहानियों में नैतिक मूल्यों और आदर्शों का विघटन, सम्बन्धता, काम जीवन की अतृप्ति, प्रेम और विवाह से जुड़ी समस्याओं के रूप में अभिव्यक्ति हुई है।

कहानी संग्रह– कितनी कैदें (1975), टुकड़ा–टुकड़ा आदमी (1977), डैफोडील जल रहे हैं। (1968), ग्लेशियर से (1984), उर्फसैम (1986), समागम (1996), मेरे देश की मिट्टी अहा (2001) एवं कुटुम (परिवार) (2016)।

मैत्रेय पुष्पा– मैत्रेय पुष्पा का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ जिले में सिकुर्रा गाँव में 30 नवम्बर 1944 को एक मध्यमवर्गीय परिवार में हुआ था। इनके पिता का नाम 'हीरालाल व माता का नाम 'कस्तूरी' था। इनकी कुछ कहानियाँ नारी जीवन पर केन्द्रित हैं तथा कुछ कहानियों में समकालीन जीवन यथार्थ के विविध पहलुओं का अंकन है। इनकी कहानियों में सामजिक रूढ़िता के प्रति तीव्र आक्रोश दिखाई देता है साथ ही स्त्री अस्मिता के लिए संघर्ष की अभिव्यक्ति है।

कहानी संग्रह– चिन्हार (1991), ललमनिया (1996), गोमा हँसती है (1998) एवं पियरी हँसती है (2014)।

राजी सेठ– राजी सेठ का 1936 में नौशेहर छावनी (अभिभाजित भारत) में हुआ था। इनकी प्रसिद्ध कहानियाँ स्त्री–पुरूष सम्बन्धों पर केन्द्रित है, लेकिन इनकी विशेषता है कि ये समस्याओं का विश्लेषण मनोवैज्ञानिक स्तर पर जाकर सूक्ष्मता से करती है।

कहानी संग्रह– अन्धे मोड़ से आगे (1979), तीसरी हथेली (1981), यात्रा मुक्त (1987), दूसरे देशकाल में (1992), यह कहानी नहीं (1998) एवं गमें हयातने मारा (2006)।

चित्रा मुदगल– चित्रा मुदगल आधुनिक हिन्दी की सर्वाधिक पठ्नीय लेखकों में से एक है। इनका जन्म 10 सितम्बर 1944 को चेन्नई (तमिलनाडु) में हुआ था। इन्हें 2019 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। ये महिला लेखन की एक ऐसी कहानीकार है, जिनकी कहानियाँ स्त्री–पुरूष सम्बन्धों के दायरे से बाहर निकलकर नगरीय–महानगरीय परिवेश में नौकरीपेशा महिलाओं तथा झुग्गी झोपड़ी में रहने वाली महिलाओं की समस्याओं को प्रस्तुत करती है। हिन्दी कहानी से जिन्दगी का बिखराव प्रमुख समस्या के रूप में दिखाई देता है।

कहानी संग्रह– जल ठहरा हुआ (1980), लाक्षागृह (1982), अपनी वापसी (1983), इस हमाम में (1987), जगदम्बा बाअबु घर आ रहे (1998) जिनावर (1996), भूख (2001), (1996), पेन्टिंग अकेली है (2014) एवं ग्यारह लम्बी कहानियाँ।

ममता कालिया– इनका जन्म 02 नवम्बर 1940 को वृंदावन में हुआ था। इनके पिता का नाम विद्याभूषण अग्रवाल था जो आकाशवाणी में कार्यरत थे। इनकी मूल ख्याति उपन्यासकार के रूप में है। इनकी कहानियों में अधिकांशतः पति द्वारा प्रताड़ित होने वाली महिलाओं के जीवन संघर्ष से सम्बन्धित है। इनकी परवर्ती कहानियों में नारी जीवन की रोजमर्रा की जिन्दगी में आने वाले संघर्षों का चित्रण है।

कहानी संग्रह– छुटकारा–1969, सीट नम्बर 6–1978, एक अदद औरत–1979, प्रतिदिन–1983, उसका यौवन–1985, जाँच अभी जारी है–1990, बोलने वाली औरत–2000, निरमोहित–2006, खुदकिस्मत–2010 एवं थोड़ा–सा प्रगतिशील–2014।

मृणाल पाण्डे– मृणाल पाण्डे आठवें दशक की एक सशक्त महिला साहित्यकार हैं। इनका जन्म 26 जनवरी 1946 को हुआ था। ये भारत की एक पत्रकार, लेखिका एवं भारतीय टेलीविजन की जानी–मानी हस्ती हैं। इनकी कहानियों में मुख्यतः नारी अस्मिता, पहाड़ी जीवन की आर्थिक तंगी, जड़ता, अनियोजित विकास जैसी समस्याओं को उठाया गया है। इन्होंने लोककथात्मक शैली को आधुनिक ढंग से प्रस्तुत किया है।

कहानी संग्रह– दरम्यान–1977, शब्दभेदी–1986, एक नीच ट्रेजरी–1981 एवं एक स्त्री का विदा गीत–1983।

नासिरा शर्मा– नासिरा शर्मा का जन्म 1948 को इलाहाबाद (प्रयागराज) में हुआ था। इन्हें वर्ष 2016 का साहित्य अकादमी पुरस्कार उनके उपन्यास पारिजात के लिए प्रदान किया गया। इनकी कहानियाँ स्त्री–पुरूष सम्बन्धों पर आधारित न होकर मानवीय संवेदना पर आधारित है। इनकी कहानियों में देशका, जाति, सम्प्रदाय से ग्रस्त समस्याओं का अंकन हुआ है क्योंकि इन्होंने ईरान और अफगान के गृह युद्धों को बड़े करीब से देखा है।

कहानी संग्रह– सामी कागज–1986, पत्थर की गली–1986, संग–साथ–1983, इबने मरियम–1994, सबीना के चालीस चोर–1997, खुदा की वापसी–1998, इन्सानी नश्ल–2001, दूसरा ताजमहल–2002 एवं अदब की बाई पसली–2013।

शशि प्रभा शास्त्री– इनका जन्म 1923 में उत्तर प्रदेश के मेरठ नगर में हुआ था। इन्होंने समाज में नारी जीवन की व्यथाओं का चित्रण अपने लेखन में किया है। इनकी कहानियाँ दाम्पत्य जीवन की विसंगतियों पर आध ाारित है।

कहानी संग्रह– धुली हुई शाम–1969, अनुत्तरित–1975, दो कहानियों के बीच–1978, जो बाकी–1981, एक टुकड़ा शान्तिरथ–1991, पतझड़–1994 एवं उस दिन भी–1996।

मालती जोशी– इनका जन्म 04 जून 1937 को औरंगाबाद में हुआ था। ये एक प्रसिद्ध लेखिका एवं कहानीकार थीं। मालती जोशी को साहित्य और शिक्षा में अनके योगदान के लिए पद्मश्री से सम्मानित किया गया था। वे हिन्दी और मराठी भाषाओं में 60 से अधिक पुस्तकों का लेखन कर चुकी थी।

कहानी संग्रह– मध्यान्तर–1977, पटाक्षेप–1978, पराजय–1979, एक घर सपनों का–1985, पिया पीर न जानी–1999, औरत एक रात है–2003, वो तेरा घर में मेरा घर–2015 एवं हादसे और हौसलें–2017।

कृष्णा अग्निहोत्री– कृष्णा अग्निहोत्री का जन्म 1934 को नसीराबाद (राजस्थान) में हुआ था। ये हिन्दी की शीर्ष महिला कथाकार मानी जाती हैं। इनकी अधिकत्तर कहानियों के विषय मध्यम वर्ग विदूरपताओं और खुशियों पर आधारित हैं।

कहानी संग्रह– टीन के घेरे–1970, गलियारे–1974, माही बनारसी रंगता–1983, जिन्दा आदमी–1986, जै सियाराम–1993, सर्पदंश–1997, अपने–अपने कुरूक्षेत्र–2001, यह क्या जगह दोस्तों–2007, जीना मरना–2010, मान भी साँझी–2013 एवं उड़ानें ऊँची–ऊँची–2016।

मधु कांकरिया– मधु कांकरिया हिन्दी साहित्य की प्रतिष्ठित लेखिका हैं। इनका जन्म 23 मार्च 1957 को कोलकत्ता में हुआ था। इनकी रचनाओं में विचार और संवेदना की नवीनता तथा समाज में व्याप्त समस्याएँ प्रमुखता से नजजर आते हैं।

कहानी संग्रह– अन्तहीन मरूस्थल–1999, बीते हुए–2004, और अंत में यीशु–2006, चिड़िया ऐसे मरती है–2012, भरी दोपहरी के अंधेरे–2013 एवं युद्ध और बुद्ध–2014।

निष्कर्ष– हिंदी कहानी साहित्य में स्त्री विमर्श का विकास न केवल साहित्यिक बल्कि सामाजिक बदलावों को भी दर्शाता है। यह शोध स्पष्ट करता है है कि हिन्दी कहानी ने स्त्री को मौन से मुखर बनने का माध्यम प्रदान किया है।

Author's Declaration:

I/We, the author(s)/co-author(s), declare that the entire content, views, analysis, and conclusions of this article are solely my/our own. I/We take full responsibility, individually and collectively, for any errors, omissions, ethical misconduct, copyright violations, plagiarism, defamation, misrepresentation, or any legal consequences arising now or in the future. The publisher, editors, and reviewers shall not be held responsible or liable in any way for any legal, ethical, financial, or reputational claims related to this

article. All responsibility rests solely with the author(s)/co-author(s), jointly and severally. I/We further affirm that there is no conflict of interest financial, personal, academic, or professional regarding the subject, findings, or publication of this article.

संदर्भ सूची–

(क) पुस्तकें एवं अलोचना–ग्रंथ–

1. नामवर सिंह– कहानी नई कहानी। नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 1989।
2. कमला प्रसाद– हिंदी कहानी का स्त्री पक्ष। इलाहाबाद : लोकभारती, 2002।
3. रमणिका गुप्ता(संपा,)– स्त्री होकर सवाल करती है। नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन, 1998।
4. प्रभा खेतान– स्त्री और पुरूष : सत्ता और यौन राजनीति।
5. सुधा अरोड़ा – आधी दुनिया मेरी। नई दिल्ली : साहित्य अकादमी 2007।
6. महावीर प्रसाद द्विवेदी– हिंदी साहित्य और स्त्री विमर्श। नई दिल्ली : लोकभारती, 2004
7. मैत्रेयी पुष्पा– स्त्री दृष्टि और हिंदी कथा साहित्य। दिल्ली : भारतीय ज्ञानपीठ, 2010 ।
8. शकुंतला महाविद्यालय (संपा.)– स्त्री विमर्श और हिंदी साहित्य। भोपाल : हिंदी ग्रंथ अकादमी, 2014
9. मैत्रेयी पुष्पा – स्त्री दृष्टि और हिंदी कथा साहित्य। दिल्ली : भारतीय ज्ञानपीठ, 2010
10. शकुंतला महाविद्यालय (संपा.)– स्त्री विमर्श और हिंदी साहित्य। भोपाल : हिंदी ग्रंथ अकादमी, 2014
11. नीलिमा चौहान – नारी विमर्श और हिंदी साहित्य। जयपुर : राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, 2011
12. उषा वर्मा – हिंदी की समकालीन कहानियों में स्त्री चेतना। वाराणसी : ज्ञानमंडल लिमिटेड, 2015।

(ग) शोध आलेख एवं पत्रिकाएँ–

1. समकालीन हिंदी कहानी और स्त्री विमर्श– हंस पत्रिका, विभिन्न अंक।
2. नारी विमर्श की प्रवृत्तियाँ– इंडिया टुडे (हिंदी संस्करण), 2015।
3. हिंदी साहित्य मे नारी दृष्टि– वागर्थ, 2016।
4. डॉ.मधु किश्श्वर– स्त्री पुरूष संबंध और साहित्य (सेमिनार पत्रिका, 2001)।

Cite this Article

"डॉ0 मीनाक्षी", "समकालीन हिन्दी कहानी और स्त्री विमर्शः एक आलोचनात्मक अध्ययन", ResearchPro International Multidisciplinary Journal (RPIMJ), ISSN: 3048-7331 (Online), Volume:1, Issue:2, October-December 2025.

Journal URL- https://www.researchprojournal.com/

DOI- 10.70650/rpimj.2025v1i200003